हमारी रस्में और बन्दिशें

सैय्यिदुल उलमा अल्लामा सै0 अली नक़ी नक़वी

मुझे इत्तफाक़ हुआ एक बार एक अक़्द में शिरकत करने का। दुल्हा जिनका निकाह हो रहा था B.A. थे। उनके बाप माशाअल्लाह अंग्रेज़ी बोलने वाले, क़ौम परस्त और तह्सीलदार। मामू एक कालेज के प्रोफेसर ग़रज़ सब रौशन ख़याल वाले यानी पूरा घर आफताब। मुझसे अक़्द पढ़ने का वादा हुआ और चूँकि जाना दूर था इसलिए तैय हुआ कि उसी मोटर पर जिस पर दुल्हा जाएगा मैं भी सवार हूँगा। चुनानचे ऐसा ही मोटर आया और हम लोग निकले। देखा तो दुल्हा सर से पैर तक लाल कपड़े पहने हुए जिसमें लचका पठ्ठा और ना मालूम क्या–क्या, हाथ में कंगने के साथ एक कटारी बंधी हुई और चेहरे पर चार–चार सेहरे जिनके बोझ से गर्दन का उठाना मुश्किल, सख़्त गर्मी थी और दोपहर का वक़्त था मैं ख़ामोशी के साथ चला जब शहर की हदें ख़त्म हो गईं और बाहर निकले तो मैंने दुल्हा से कहा कि अब आप सेहरा उलट दीजिये, बहुत गर्मी है, जब वहाँ पहुँचेंगे तो फिर सेहरा डाल लीजियेगा। उन्होंने जो मुझें अपने हालत पर मेहेरबान पाया तो कहने लगे कि मैंने तो समझ लिया कि जिस दिन किसी का अक़्द हो उस दिन वह अपने को मुर्दा समझ ले। मुझको मौक़ा मिल गया। मैंने कहा आप तो पढ़े लिखे हैं आपके बाप इतने सुधार वाले और आपके मामू ऐसे। फिर आपके यहाँ यह पाबन्दियाँ कैसी? जवाब दिया कि मैंने कहा था मगर वालिद ने मुझे डाँट दिया। दूसरे दिन उनके बाप से मुलाक़ात हुई तो मैंने उनसे बताया और कहा कि आपके यहाँ तो ऐसी बातों का होना ताज्जुब है। कहा ''जी हाँ इन बातों को बुरा तो मैं भी समझता हूँ मगर एक ख़ाला हैं उनकी वजह से यह सब कुछ हो गया।'' मैंने दिल में कहा कि एक ख़ाला थीं जब तो यह हुआ। अगर माशाअल्लाह घर औरतों से भरा होता तो क्या होता।

हक़ीक़त यह है कि इन लोगों की तरफ से यह सिर्फ रौशन ख़याली का दिखावा है या इसे फैशन समझ लीजिये कि यह इन बातों को ज़बान से बुरा कहते हैं लेकिन अगर हक़ीक़त में इन्हें इन बुराईयों का एहसास होता और नज़र में अहमियत होती तो यह ज़रूर इन बातों से मना करते।

अच्छा इन बातों को जाने दीजिये। दोनो तरफ की रज़ामन्दी तो अक़्द के लिए शरई हैसियत से बिलकुल लाज़िम व ज़रूरी है मगर आपके यहाँ रस्मों में इसकी जगह नहीं। लड़की की ख़ुशी किसी तरह मालूम नहीं की जाती। बल्कि अगर किसी तरह

लड़की की नाख़ुशी की जानकारी हो जाए तो कभी–कभी माँ–बाप को ज़िद हो जाती है और वह कहते हैं कि अब तो हम यहीं करेंगे। इसकी वजह से समाजी ख़राबियाँ पैदा होती हैं। बेशक आपके यहाँ शर्म और हया के बिना टूटे उनका इरादा मालूम हो सके इसके लिए एक बेहतरीन सूरत यह है कि उनसे किसी और लड़की का नाम लेकर मश्वरा कीजिये कि उसका अक़्द फलाँ लड़के के साथ किया जाए? इस तरह वह अपने ख़याल को अज़ादी से सामने ले आएंगी और आपको इस ख़याल की पाबन्दी ज़रूरी समझनी चाहिए।

यह समझ लेना कि मामले वाले हम हैं। वह कुछ नहीं, ग़लत है। शरीअत में तो मामले वाले वही हैं। अक़्द के वक़्त अक़्द की वकालत उन्हीं से हासिल की जाती है मगर आपने रस्में ऐसी बना दीं कि उनकी ख़ुशी और नाख़ुशी का इसमें पता नहीं चल सकता जब अक़्द करने वाला वकील उन से पूछे तो ख़ामोश रहना रस्म, पास बैठने वालों का ज़िद करना कि ''हूँ'' कह दो रस्म में दाख़िल, इस ''हूँ'' के बाद रोना रस्म में दाख़िल। अब बताइये कि कोई लड़की नाराज़ भी है तो वह किस तरह अपनी नाराज़गी दिखाए? और हम किस तरह अन्दाज़ा करें कि यह लड़की ''हूँ'' ख़ुशी से कह रही है या ज़बरदस्ती? हर चीज़ में बदशुगूनी की तरफ नज़र जाती है मगर इस रोने में बदशुगूनी का भी लेहाज़ नहीं किया जाता। मुमकिन है कि कभी कोई लड़की अक़्द के मौक़े पर नाराज़गी की वजह से रोई हो। उसी वक़्त से उस रस्म का पर्दा डाल दिया गया ताकि वाक़ेए की हक़ीक़त न खुलने पाए। अब हमारे लिये कोई चारा नहीं और हम ज़ाहिरी इक़रार के पाबन्द हैं इसलिए अक़्द पढ़ देते हैं मगर आप याद रखिये कि अगर लड़की ने दबाव से ''हूँ'' कहा हो और हक़ीक़त में राज़ी न हो तो शरीअत के हिसाब से वह निकाह कोई चीज़ नहीं होगा।

आपको अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास पूरी तरह होना चाहिए। आपको इस कश्ती (नाव) को उसके किनारे तक पहुँचने की फिक्र होनी चाहिए जिसे आप समुन्द्र में डाल रहे हैं। अगर उसी वक़्त से लड़की के ख़यालात अपने होने वाले शौहर के बारे में ख़राब हों तो कभी उसकी घरदारी उसके साथ अच्छी न हो सकेगी। आपका फर्ज़ है कि उसकी ज़िन्दगी में इत्मिनान व सुकून पैदा होने के तमाम रास्तों को अभी से तैयार करें। आपको इसमें कोई बुरा ख़याल भी न होना चाहिए।

रिश्तेदारी में तो अक्सर लड़कियों को रिश्तेदारों के लड़कों के साथ बचपने में खेलने का मौक़ा हासिल हो चुका होता है। बहुत मुमकिन है कि उन्हें उसी वक़्त किसी से मुहब्बत और नफरत पैदा हो चुकी हो। किसी और तरह पर नहीं बल्कि मासूमाना मुहब्बत और नफरत मगर क्या उस वक़्त जो ख़यालात पैदा हो चुके हैं वह बदल सकते हैं? अब अगर आपने उनकी क़िस्मत को जोड़ा है ऐसे लड़के के साथ जिससे उन्हें फितरती नफ़रत पैदा हो चुकी है तो हरगिज़ उनकी ज़िन्दगी

इसके बाद ठीक नहीं हो सकती। बहुत से घरों की आबादी और बर्बादी का सवाल इस मसले में छुपा है।

कुछ नई रौशनी के लोग और नयेपन के हामियों (Modern People) का यह ख़याल कि शादी को मुहब्बत की बुनियाद पर होना चाहिए यानी पहले मुहब्बत पैदा करने का मौक़ा दिया जाए फिर शादी की जाए। यह तो मेरे नज़दीक हरगिज़ ठीक नहीं है क्योंकि मुहब्बत एक परेशानी बढ़ाने वाली मौज (लहेर) है और शादी एक बनाई हुई (टिकाऊ) इमारत। कभी मज़बूत इमारत हरकत वाली लहर पर नहीं बनाई जा सकती इसलिए शादी की बुनियाद तो समझदारी भरी सोच पर हो सकती है जिसके लिए माँ–बाप की राय ज़्यादा भरोसे वाली है और उनका चुनाव ज़्यादा महफ़ूज़ है मगर फिर भी लड़की की चाहत को बिलकुल नज़रअन्दाज़ कर देना हरगिज़ ठीक नहीं है। चुनें माँ–बाप ही मगर लड़की की रज़ामन्दी ख़ुले दिल से ज़रूर हासिल करें।

इसके साथ अक़्द में सादगी और किफ़ायत शिआरी सामने रखें हरगिज़–हरगिज़ इसमें छोटेपन का ख़याल दिल में न लाएं। ख़ुद पैग़म्बरे इस्लाम (स0) से बढ़कर किसकी इज़्ज़त होगी। अगर आप (स0) चाहते तो हज़ारों रुपया शादी की तक़रीब में ख़र्च कर देते मगर आप (स0) ने अपनी बेटी सैय्यिद–ए–आलम (स0) का अक़्द जिस तरह किया। आपको मालूम है। दहेज़ सैय्यिदा का क्या था? खजूर की छाल के कुछ तकिये, चमड़े का बिस्तर, कुछ मिट्टी के बर्तन, एक चर्ख़ा और एक चक्की। आपसे यह नहीं कहा जाता कि आप भी चर्ख़ा और चक्की दीजिये मगर आप भी अपने ज़माने के हिसाब से ज़रूरत की चीज़ें अपनी हैसियत के हिसाब से दीजिए।

सैय्यिद–ए–आलम (स0) और अमीरुलमोमिनीन (अ0) का जो ज़िन्दगी गुज़ारने का आम तरीक़ा था, अल्लाह के रसूल (स0) ने उस हिसाब से काम आने वाली चीज़ें बेटी और दामाद को दीं आप भी अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने के हिसाब से काम आने वाली चीज़ों की एक लिस्ट बना लीजिये मगर उसमें सिर्फ़ दिखाने का ख़याल न होना चाहिए।

यह दिखावा नहीं तो क्या है कि दहेज़ के सामान को ज़्यादा दिखलाने के लिए हर छोटी से छोटी चीज़ एक–एक मज़दूर के सर पर रख दी इससे ज़ाहिर होता है कि न लड़की की ज़रूरतें सामने हैं, न दामाद की। बल्कि सिर्फ़ अपना दिखावा मक़सद है।

हम अगर अपनी सभी रस्मों में रसूल (स0) और अहलेबैते रसूल (स0) के अच्छे तरीक़े को सामने रखें तो हमारी ज़िन्दगी में वह इंक़ेलाब हो जाए जो हमारी आती हुई मौत को पलटा दे। वरना समझ लीजिये कि हम जल्दी ही ग़लत हर्फ़ की तरह इस दुनिया से मिट जाएंगे। कोशिश कीजिये कि ऐसा न हो। □□□